ब्रज क्षेत्र के कतिपय लोक अवनद्ध वाद्य–वादक एवं उनके वादन वैशिष्ट्य का अध्ययन

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा से संगीत में पीएच.डी.

की उपाधि हेतु शोध–प्रबन्ध

की रुपरेखा

2017

निर्देशिका

डॉ रश्मि श्रीवास्तव
एसोसिऐट प्रोफसर
संगीत विभाग,

शोधार्थिनी

शिवानी
संगीत तबला

संगीत विभागाध्यक्षा

प्रो0 सुभद्रा कुमारी सतसंगी

कला संकाय

प्रो0 रागिनी रॉय

कला संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा– 282005

भूमिका

भारत विविधताओं में एकता का देश माना जाता हैं। जहॉ विविध भाषा बोली, रहन–सहन , रीति–रिवाज, परम्पराओं, संस्कृति व कलाओं का संगम हैं। भारत की भौगोलिक संरचना में जहॉ विविधता के दर्शन होते हैं। वहीं विविध जातियॉ अनेक धर्मावलंम्बियो के साथ बहुरंगी संस्कृति एवं नाना प्रकार की भाषा यहॉ का वैशिष्ट्य हैं।

जिस प्रकार एक गुलदस्ते में विविध रंग और सुगंध के पुष्प अपनी–अपनी विशेषतायें रखते हुये भी उसके सामूहिक सौंदर्य की वृद्धि करते है ठीक उसी प्रकार क्षेत्रिय सांस्कृतिक विशिष्ट्तायें भी इस देश की सामूहिक सस्कृति को गौरव और पूर्णता प्रदान करते हुये अपना वैशिष्ट्य रखती हैं। जिसमे ब्रज क्षेत्र की संस्कृति अपने में अनूठी हैं।

भारतीय संस्कृति में ब्रज भूमि एक अलग ही महत्व रखती हैं। ब्रज क्षेत्र ने भारत की विराट संस्कृति को उन्नतशील व समृद्धशाली बनाने में अपना विशेष योगदान दिया है। इसीलिए ब्रज की पवित्र भूमि अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक, कलात्मक एवं सांगीतिक अभिव्यक्ति के लिए सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध रही हैं।यह भूमि साहित्य, संगीत और कला का अनूठा संगम हैं। ब्रज का संगीत वह मानसी गंगा है। जिसमे अवगाहन से मन पवित्र होता है, तन में स्फूर्ति आती हैं और ध्यान मानव के जीवन रस पर केन्द्रित हो जाता हैं। ब्रज भूमि जिसको श्री कृष्ण जी ने अपने बांसुरी वादन व रास नृत्य के द्वारा अविभूत किया है इसीलिये श्री कृष्ण जी की लीला भूमि ब्रज वसुधा पर अमिट छाप स्पष्ट परिलक्षित होती हैं।

संगीत जो गायन, वादन व नृत्य का संगम है अर्थात् संगीत के अन्तर्गत गीत, वाद्य व नृत्य तीनों का समावेश होता है।

" गीतं वाद्यं नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते"

अस्तु गायन, वादन व नृत्य इन तीनों के मिश्रण को संगीत कहते हैं। भारतीय संगीत में प्राचीन काल से ही दो धारायें परिलक्षित होती हैं।

शास्त्रीय संगीत **लोक संगीत**

1 शास्त्रीय संगीत – शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो शास्त्रों के नियमों के अनुसार है अर्थात् नियमों में बॉधकर आकर्षक रीति से गाया अथवा बजाया जाता है वह शास्त्रीय संगीत कहलाता हैं।

2 लोक संगीत— लोक में प्रचलित संगीत को लोक संगीत कहते हैं। लोक दो शब्दों से मिलकर बना है,

लोक + संगीत

लोक का अर्थ है जन साधारण और संगीत का अर्थ गायन, वादन तथा नृत्य का मिश्रित रुप अर्थात् जो संगीत जन साधारण द्वारा गाया बजाया या भाव भंगिमाओ द्वारा प्रदर्शित किया जाये लोक संगीत कहलाता है।[1] लोक संगीत लोक रंजन तथा जन साघारण की आंतरिक भावनाओं का प्रतीक है। सहज धुनों सहज भाषा से आबद्ध इस संगीत में किसी व्याकरण अथवा शास्त्र नियंत्रण की आवश्यकता नहीं होती वरन् यह प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रुप से स्वयं प्रकाशित होता हैं।लोक संगीत की स्वर रचना में किसी राग विशेष स्वर वैचि़त्र्य या गमक आदि निर्धारित नहीं होते हैं। इस प्रकार लोक संगीत किसी व्यक्ति विशेष की नहीं अपितु साधारण जन मानस की सहज अभिव्यक्ति है। लोक संगीत में नैसर्गिकता सहजता व सरलता का भाव है वह शास्त्रीय संगीत में कहॉ? लोक संगीत में हर प्रान्त के रीति—रिवाज परम्परा संस्कार की झलक है। जो भारत के हर प्रान्त की विशेषता को दर्शाता है।

लोक संगीत के क्षेत्र में ब्रज की अपनी समृद्ध व सांगीतिक पृष्ठभूमि हैं। जहॉ प्रचलित लोक संगीत के अन्तर्गत **ढोला, रसिया, आल्हा, होरी, झूलना, लावनी**[2] **व चरकुला, ढाडा—ढाढिन, मयुर, लॉगुरिया व लोक नाट्य नौटंकी, स्वांग, भगत, रासलीला, रामलीला, एवं नृसिंह लीला** आदि के साथ संगत हेतु **ढोलक, ढोल, बम्ब, खंजरी, ताशा , उपंग, भेरी, ढफ, नक्कारा, मुरज , मंदिलरा** अनेकानेक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।[3]

यद्यपि ब्रज क्षे़त्र में लोक संगीत की तीनों ही विधाओं गायन वादन व नृत्य की अनुठी छठा दृष्टव्य है परन्तु शोधार्थिनी चूॅकि अवनद्ध वर्ग की छात्रा है एवं स्वयं ब्रज क्षेत्र से जुडी हुई है अस्तु ब्रज क्षेत्र की लोक संस्कृति से प्रभावित रही है।फलतःइस क्षेत्र के लोक अवनद्ध वाद्यों के विषय में जिज्ञासा जाग्रत होना स्वाभाविक ही था। अपनी जिज्ञासा की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी ने इस दिशा में हुए शोधकार्यों पर दृष्टिपात किया तो निम्नलिखित कार्य इस दिशा में प्राप्त हुए,यथा—

1—लघु शोध प्रबन्ध

ब्रज की लोकगायन शैलियों एवं उनमें प्रयुक्त होने वाले प्रमुख वाद्यों का अध्ययन **—शोधकर्ता—रुपाली गुप्ता**

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में ब्रज में प्रचलित लोक संगीत के वर्णन के साथ ही उनमें प्रयुक्त लोक वाद्य तत् वाद्य, सुषिर वाद्य,घन वाद्य, अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग व ढॉचेगत विवरण प्राप्त होता है।

2—''भरतपुर क्षेत्र की लोक संस्कृति एवं ब्रज लोक गीतों का अध्ययन''—कु पारुल गुलाटी

जिसमें भरतपुर की लोक संस्कृति का विवरण दिया गया है तथा संस्कार , त्यौहार सम्बन्धी लोक गीत ं आध्यात्मिक लोक गीतों एवं इन लोकगीतों की स्वरलिपि भी प्राप्त होती है।

शोध प्रबन्ध

1–''ब्रजरास के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन''–आरती श्रीवास्तव

जिसमें ं ब्रज और उसकी सांस्कृतिक परम्परा तथा विकास को समझाया है साथ ही ब्रजरास की उत्पत्ति विकास और स्वरुप का वैज्ञानिक विवेचन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है तथा ब्रजरास का अध्ययन एवं ब्रजरास में प्रयुक्त संगीत, राग तथा तालों आदि का नामोल्लेख किया गया है।

2–''ब्रज प्रदेश के प्रमुख ऋतु–पर्वों के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन''– कु अल्का वार्ष्णय

जिसमें ब्रज के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व का वर्णन किया गया है साथ ही हिन्दु संस्कृति में षड्ऋतु–चक्र ,ऋतु पर्व के बारे में बताया गया है। इसी के साथ ब्रज में नवरात्रि संबंधित गीतों,होरी सावन एवं ब्रज के प्रमुख ऋतु पर्वों के गीत,नृत्य व उनमें प्रयुक्त वाद्यों का उल्लेख किया गया है।

पुस्तक एवं पत्र–पत्रिकायें:–

1–ब्रज लोक संगीत –डॉ.निशा रावत

जिसमें ब्रज का पौराणिक एवं सांस्कृतिक महत्व वर्णित है साथ ही लोक एवं लोक संगीत एवं संगीत व्याख्या की गयी है एवं हाथरस क्षेत्र के लोक गीत, नृत्यों का वर्णन किया गया है तथा लोक वाद्यों का ढॉचेगत विवरण दिया गया है।

2–ब्रज संस्कृति में संगीत –अंजू शर्मा

इसमें समाज गायन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं बृज संस्कृति में संगीत का महत्व, समाज गायन की परम्परायें,पुष्टिमार्गीय समाज गायन, हरिदासी सम्प्रदाय का समाज गायन,राधा वल्लभ सम्प्रदाय एवं ब्रज में समाज गायन की अन्य परम्पराओं एवं ब्रज के समाज गायन में प्रयुक्त वाद्ययन्त्र एवं उनकी ढॉचेगत विशेषताओं के बारे मे बताया गया है।

पत्रिकाएँ

1 संगीत अंक नम्बर –2013, ब्रज की रस लीला –प्रारल्य

जिसमें रास लीला का प्रारम्भ उसके स्थापना और विकास में महानुभावो एवं रास लीला के संबंध में प्रमाणिक उल्लेख मिलते हैं साथ ही वर्तमान में रासलीला आदि के विषय में चर्चा की गयी है उपर्युक्त विवरणों को दृष्टिगत रखते हुए स्वतः ही स्पष्ट है कि अभी तक ब्रज के लोक अवनद्ध

वाद्यों से सम्बन्धित जो भी कार्य हुए हैं उनमें इन अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग, ढॉचेगत विशेषता के अतिरिक्त और कोई जानकारी नहीं मिलती है जबकि अनेक अवनद्ध वाद्य ऐसे है जो कि ना केवल लय धारणा के लिऐ प्रयोग में लाये जाते हैं अपितु वे शास्त्रीय संगीत के वाद्यों की भॉति संगीत में सौन्दर्यवृद्धि के साथ ही वादन – वैशिष्ट्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान रखते है तथापि उन वाद्यों के वादकों तथा उनके वादन–वैशिष्ट्य के विषय में साधारणतय जनमानस अनभिज्ञ ही हैं।अस्तु ब्रज क्षेत्र के कतिपय लोक अवनद्ध वाद्यों उनके वादक कलाकारो तथा वादकों के वादन –वैशिष्ट्य आदि बिन्दुओं के विषय में अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध कराने व लुप्त हो रहें वाधों के संरक्षण के उपायो का अध्ययन करने के दृष्किोण से उक्त विषय का चयन शोध विषय के रुप में किया गया हैं

विषय कथन :–ब्रज क्षेत्र के कतिपय लोक अवनद्ध वाद्य वादक एवं उनके वादन –वैशिष्ट्य का अध्ययन

विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः–

ब्रज क्षेत्र :– श्री कृष्ण के जन्म स्थान मथुरा और उनकी लीलाओं के आस– पास के समस्त प्रदेश ही ब्रज अथवा ब्रज क्षेत्र कहे जाते हैं ,यद्यपि भाषा क्षेत्र को संस्कृतिक इकाई के रुप में ब्रज प्रदेश कहा जाता है। इसकी सीमा उत्तर प्रदेश के मथुरा , आगरा ,मैनपुरी ,एटा , अलीगढ़ , जनपदो , के अतिरिक्त राजस्थान के धौलपुर ,भरतपुर ,करौली आदि तक मानी गई है किन्तु ब्रज की सीमा (क्षेत्र) श्री कृष्ण के लीला स्थालो की चौरासी कोस की परिक्रमा के आधार पर मापी जाती है।[4]

लोक अवनद्ध वाद्यः–

लोक–लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है, जिसकी व्यक्तिगत पहचान न होकर सामुहिक पहचान है।

अवनद्धः– खाल से मढ़े वे वाद्य जो कि संगीत में लय व ताल के निर्वाह हेतु प्रयोग में लाये जाते है अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं।[5]

लोक अवनद्ध वाद्यः– वह वाद्य जो जनसाधारण में प्रयोग किये जाते है लोक अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं।[6]

वादन–वैशिष्ट्य :– वादन वैशिष्ट्य से तात्पर्य वादकों द्वारा बजायी गयी।वादन सामग्री एवं वादन विधि से है।7

परिसीमांकनः–प्रस्तुत शोध कार्य अध्ययन की समय सीमा व विषय के गहनता पूर्वक अध्ययन को ध्यान में रखते हुये कम से कम पॉच ढोलक वादक , पॉच नक्कारा वादकों तथा उनके वादन वैशिष्ट्य के अध्ययन तक सीमित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य लोक अवनद्ध वाद्यों का भी उपलब्धता के आधार पर अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन के उददे्श्यः–

1. ब्रज की सांस्कृतिक / सांगीतिक विरासत का अध्ययन ।
2. ब्रज क्षेत्र के प्रमुख लोक अवनद्ध वाद्य वादक एवं उनके वादन वैशिष्ट्य का अध्ययन।
3. कतिपय अन्य लोक अवनद्ध वाद्यों का परिचयात्मक अध्ययन।
5. लुप्त प्रायः लोक अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन।
6. लोक अवनद्ध वाद्यों के संरक्षण के उपायों का अध्ययन।

अध्ययन की विधिः—प्रस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक, साक्षात्कार विधि, व सर्वेक्षण विधि , द्वारा सम्पन्न किया जायेगा।

उपकरण एवं अध्ययन के स्त्रोत— शोध प्रबन्धों में तथ्यों के संकलन हेतु दृश्य—श्रव्य सामग्री—टेप रिकोर्डर,सी.डी., इन्टरनेट—व पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न पुस्तको, पत्र—पत्रिकाओं व गुणीजनों से विचार विमर्श के माध्यम से किया जायेगा।

अध्ययन की रुपरेखाः

प्रथम अध्यायः— सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय अध्यायः—ब्रज की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिचयात्मक अध्ययन।

तृतीय अध्यायः— ब्रज क्षेत्र में प्रचलित लोकसंगीत का अध्ययन।

चतुर्थ अध्यायः— ब्रज क्षेत्र के लोकसंगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन।

पंचम अध्यायः— ब्रज क्षे़त्र के कतिपय ढोलक वादक एवं उनके वादन वैशिष्ट्य का अध्ययन।

षष्ठम् अध्यायः— ब्रज क्षेत्र के कतिपय नक्कारा वादक एवं उनके वादन वैशिष्ट्य का अध्ययन।

सप्तम् अध्यायः— ब्रज के लुप्त प्रायः लोक अवनद्ध वाद्यों के संरक्षण के उपाय का अध्ययन।

उपसंहार

सन्दर्भ सूचीः—

1. रावत, डॉ. निशा— ब्रज लोक संगीत—पृष्ठ संख्या —30
2. गुप्ता, रूपाली— ब्रज की लोक गायन शैलियों एवं उनमें प्रयुक्त होने वाले प्रमुख वाद्यों का अध्ययन पृष्ठ संख्या— 14
3. शोध प्रबन्ध— गुप्ता, निम्मी— ब्रज के लोक नाट्य 'भगत' का सांगीतिक अध्यनन—पृष्ठ सं0—17—41
4. शोध प्रबन्ध— वार्ष्णेय, कु0 अल्का— ब्रज प्रदेश के प्रमुख ऋतु पर्वो के संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन— पृष्ठ संख्या—7
5. www. wikipedeia.com
6. www. wikipedeia.com
7. कान्त, दीक्षित कृष्ण— उपाध्याय, सूर्यानारायण— मानक विशाल हिन्दी कोश— पृष्ठसख्या— 397

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः—

1. शर्मा, डॉ. अन्जू शर्मा— ब्रज संस्कृति में संगीत— राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली —1996
2 रावत, डॉ. निशा—ब्रज लोक संगीत— संजय प्रकाशन, नई दिल्ली—1996
3 मिश्र, डॉ. लालमणि— भारतीय संगीत वाद्य —भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली—2002
4 रंजन, चतुर्वेदी राजेन्द्र— ब्रज लोक गीत उत्तर प्रदेश— संगीत नाटक अकादमी—1989
5 कु0, डॉ0 कौशल —भारतीय लोक वाद्य ,साहित्य रत्नालय— 2009
6 सेन, डॉ0 अरुण कुमार— भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन —मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी—2005
7 माथुर ,नीता —हिन्दुस्तानी संगीत में होली गान —राधा पब्लिकेशन्स ,नई दिल्ली—2002
8 मराठे, डॉ0 मनोहर भाल चन्द्रराव— ताल—वाद्य शास्त्र— शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर—1991
9. मिश्र, पं0 विजयशंकर— तबला पुराण— कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली —2005
10. बम्बम’, डॉ0 महेन्द्र प्रसाद शर्मा —अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा—अभिषेक पब्लिकेशन्स, दिल्ली— 2008